Vol 3 Issue 4 Jan 2014

Impact Factor : 1.6772 (UIF)

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Review Of Research
Vol. 3, Issue. 4, Jan. 2014
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरातत्वशास्त्र

सोमवंशीय क्षत्रिय राजवंश का अन्धकार युगीन इतिहास

[1]CHANDRIKASINH SOMVANSHI AND [2]JASWANTKUMAR PREMJI BHAI CHAUDHRI

[1]M.A.(4th Subjects), Ph.D., M.R.P./ M.R.P. (U.G.C)
Teacher Feloowhip in History.National Fellowship for D. Liit, Degree
Spondored By Ministry of H.R.D., New Delhi.
[2]Deptt : of History , Lunawada, (Gujarat).

सारांश :

मान्नीय ठाकुर त्रिलोक सिंह सोम (सुपुत्र स्वर्गीय सर्वश्रीमान बाबू राजेन्द्रसिंह सोमजी) ने अपने आर्टिकल 'सोमवंशी क्षत्रिय राजवंश' को बखूबी एवं विद्वता–पूर्वक लेखनी चलायी है। उनकी सूझ–बूझ और प्राचीनतम् पुस्तकों के गहेन अध्ययन से प्रभावित होकर मैं और मेरे मित्र प्रो. महेन्द्रकुमार डी. सिजु, हिन्दी विभाग, आदीपुर ने इस लेख को दुबारा थोडे से फेर बदल के साथ 'अर्न्तराष्ट्रीय जनरल' में प्रकाशित की इच्छा व्यक्त की है।

प्रस्तावना :

विश्व प्रसिध्द महाविनाशकारी महाभारत युध्द में महाबली पांडव भीमसेन के पुत्रों और पौत्रों ने प्रयत्नकारी युध्द किया था और शत्रुओं के दैवी अमोघ अस्त्रो (ब्रह्मास्त्र और इन्द्रवज द्वारा मारे गये थे। महाभारत युध्द की समाप्ति पर पांडव भीमसेन की संततियों में केवल उनके प्रपौत्र मेघवाहन(घटोत्कच के पौत्र) बच रहे गये थे। महाबली घटोत्कच को अपने मामा राक्षसराज हिडिम्ब का विस्तृत राज्य प्राप्त हुआ था जो भारत के कई प्रांतो में स्थापित थे जिनमें कुमाऊँ (उत्तरांचल), अरउर (वर्तमान डीमापुर–असम), कर्ण–सुवर्ण (पं. बंगाल), सिरपुर–रायगढ (छत्तीसगढ), नासिक (महाराष्ट्र), अणहिलवाड़ा पट्टण (गुजरात) तथा वर्तमान चित्रदुर्ग (कर्नाटक) प्रसिध्द हैं। ये संभवतः उपनिवेश थे जो राज्यपालों द्वारा शासित थे। ये सभी राज्य मेघवाहन को विरासत में मिले थे। महाबली घटोत्कच के वंशजों में कामरूप (असम) और उत्तरी बंगाल का शक्तिशाली सोमवंशी कूच क्षत्रिय राजवंश, गौड़ बंगाल व हिमाचल प्रदेश का सोमवंशी सेन क्षत्रिय राजवंश तथा गोंडा अवध का सोमवंशी सेन क्षत्रिय राजवंश अत्याधिक प्रसिध्द हुए। वीर शिरोमणि बनाफर क्षत्रिय भी महाबली घटोत्कच के वंशज हैं। बारह सौ वर्ष प्राचीन पुस्तक के अनुसार महाभारत युध्द के तत्काल पश्चात् पाण्डव भीमसेन के प्रपौत्र महाराज मेघवाहन और उनके पुत्र महाराज नरवाहन ने अयोध्या और गोंडा पर भी राज्य किया था। जैन हरिवंश पुराण के अनुसार मेघवाहन चौदह वर्ष की आयु में अपने प्रपितामह पाण्डव भीमसेन के साथ दिग्विजय या पर गये थे। जरासंघ, शिशुपाल और कर्ण के पौत्रों के संयुक्त विशाल सेना से युध्द किया था और उन्हें पराजित करके राज्य–कर वसूल किया था। महाभारत में पाण्डव भीमसेन की पूर्व दिशा की दिग्यवजय के सम्बन्ध में सुह्म देश (पश्चिम–दक्षिण बंग–ताम्रलिप्ति और समतट बंगाल की खाडी का तटवर्ती प्रदेश) के आगे लौहित्य (ब्रह्मपुत्र नदी तटवर्ती प्रदेश) तक पहुँचने का उल्लेख है।[2]

वर्तमान डीमापुर (असम) वही प्राचीन हिडिम्बापुर है जिसकी स्वामिनी राजकन्या हिडिम्बा थी जिससे पाण्डव भीमसेन ने विवाह किया था।[3] असम का पौराणिक नाम था कामरूप जगदम्बा कामाख्या देवीजी का विश्वप्रसिध्द मंदिर कामरूप की राजधानी प्राग्यजोतिषपुर (गुवाहाटी) में स्थित है। यहाँ का राजा मुरर्दत्य था।

Title: "*प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरातत्वशास्त्र सोमवंशीय क्षत्रिय राजवंश का अन्धकार युगीन इतिहास* ".Source: Review of Research [2249-894X]CHANDRIKASINH SOMVANSHI AND JASWANTKUMAR PREMJI BHAI CHAUDHRI yr:2014 vol:3 iss:4

क्षत्रिय दूत By ठाकूर बीरेन्दसिहं चौहान पृ. 35 से 48, अध्यक्ष अखिल भारतीय क्षत्रिय महासंघ (रजि.), करोलबाग नयी (दिल्ली)।
(1) 'तिलकमन्जरी' By
(2) महाभारत, सभापर्व, 30, 25, 36
(3) देवात्मा हिमालय By प्रबोधकुमार सन्याल कृत, भूमिका पण्डित जवाहरलाल नेहूँरू पृ. 146

युध्द में उसका वध करने के पश्चात् भगवान श्रीकृष्ण ने नरकासुर (शिव भगवान का परम् भक्त था।) के पुत्र भगवद्दत को कामरूप का राजा बनाया। उसे आदेश दिया किवह मुरदैत्य की राजकन्या "मौवी" (कामकंटकटा)को अपनी सहोदरा के समान दे। पाण्डव भीमसेन के महाबली पुत्र घटोत्कच का विवाह प्राग्ज्योतिषपुर (कामरूप) की इसी राजकन्या "मौवी" से हुआ था जिनसे चार पुत्र बर्बरीक, अंजनपर्वा, मेघबाहर, या मेघवर्ण या मेघनाद और चौथा पुत्र अपनी माता हिडिम्बा के साथ हमेशा साथ में रहता था, उत्पन्न हुए। घटोत्कच अपने पुत्र बर्बरीक के साथ भगवानजी से मिलने द्वारिकापुरी गये।[4] भगवान श्रीकृष्ण ने घटोत्कच को बड़े स्नेह से गले से लगाया और पूछा, पुत्र तुम अपने मामा के राज्य का शासन प्रबन्ध कुशलाता पूर्वक तो कर रहे हो ? तुम्हारे राज्य में प्रजा सुखी तो है ? घटोत्कच ने अपने वर्ण धर्म के विषय में पूछा तब भगवान श्रीकृष्णजी ने उत्तर दिया कि हे कुरू! तुम क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुए हो, इससे पहले बल की साधना करो, देवी की आराधना करो और पंचयज्ञ को किसी प्रकार न त्याग करो। महाभारत के द्रोणपर्व में घटोत्कच ने अश्वत्थामा से कहा देखों, मैं कौरवों के विशाल कुल में भीमसने से उत्पन्न हुआ हूँ। युध्द भूमि या फिर रणभूमि (समरांगण) में कभी पीठ न दिखाने वाले पाण्डवों का पुत्र हूँ। राक्षसों का राजा हूँ और दशग्रीव रावण के समान बलवान एवं बलशाली हूँ।

प्राचीन धार्मिक ग्रंथ विष्णुरहस्य में राक्षस जाति को देवयोनि तथा क्षत्रिय वर्ण में होना लिखा है[5], तथा राक्षसों के नेता निर्ऋति को भी क्षत्रियवर्ण लिखा गया है। उन्हें भगवान विष्णु के भुजाओं से उत्पन्न बताया बृहद्‌ारण्यकोउपनिषद (वैदिक साहित्य) में देवयोनि क्षत्रियवर्ण की विशद् व्याख्या दी गई है। महाभारत युध्द के पश्चात् समकक्ष जातियाँ एक दुसरे में विलय हो गयी। अनार्य ब्राह्मण जातियों में मिल गयी और एक नयी ब्रह्माण संस्कृति की स्थापना हुई। युध्द प्रिय दैत्य, दानव, राक्षस व नाग जातियाँ आर्य क्षत्रियों में विलय हो गयी। प्राचीन समय से ही इनमें परस्पर विवाह सम्बन्ध होते चले आ रहे थे।[6] पाण्डव भीमसेन के पुत्र घटोत्कच का प्राकृत अपभ्रंश या पर्याय घरूका ही बनाफर, घटौतिया, बाहन, शूर, मेघ आदि लगाते है और लिखा हुआ मिलता है। अतः महाबली घटोत्कच के वंशज–कुरूवंशी, पाण्डववंशी, घरूकावंशी और नामान्त में प्राचीन समय से सेन, सोमवंशी, पाण्डववंशी क्षत्रिय कहलाते है।[7]

महाभारत युध्द में कामरूप का राजा भगव'दत्त कौरवों के पक्ष में लड़ा था और मारा गया था। उसके पुत्र ने कुछ समय तक कामरूप (आसाम) पर राज्य किया, परन्तु बाद में महाराज नरवाहन (महाबली घटोत्कच के प्रपौत्र) प्राग्ज्योतिषपुर (डीमापुर हिडिम्बापुर) पर अधिकार करके उसे दक्षिण कछार का सामंत राजा बना दिया जहां भगदत्त के वंशज कई पीढ़ियों तक राज्य करते रहे।

(4) स्कन्दपुराण, माहेश्वर, अध्याय 60 श्लोक 63.
(5) जातिभास्कर By महामहोपाध्याय पं. ज्वाला प्रसाद मिश्रा, पृ. 496–509. बेंकटेश्वर प्रेस स्ट्रीम, बम्बई 1925 ई.
(6) भारतीय परम्परा और इतिहास ठल डॉ. रांघेय शेघव।
(7) नृपवंशावली By कविवर मतिराम कृत, विजयमुक्तावली By कवि छत्रसिंह बिरचित महाभारत–महाकाव्य (दोहा–चौपाई में) By राजा सबलसिंह चौहान कृत, क्षत्रियवर्तमान By डॉ. अजीतसिंह, प्रहलाद सिंह परिहार, क्षत्रियवंशावली By ठाकुर उदयनारायणसिंह निमम्भ एवं क्षत्रियवंश भास्कर By डॉ. इन्द्रदेव–नारायणसिंह मु+पोस्ट = मभुरापुर वैशाली (बिहार) और सोमवंशावली By ठाकूर स्वर्गीय सर्वश्रीमान् बाबू राजेन्द्रसिहं सोम. आदि–आदि।

कालांतर में महाराज नरवाहन के वंशजो ने बंगाल और उत्कल पर भी अपने राज्य स्थापित किये जो सुदीर्घ समय तक अस्तित्व में रहे, परन्तु साम्राज्यवादी बड़ी शक्तियों और पड़ोसी राज्यों के निरंतर आक्रमणों से इनके राज्यों की सीमाओं में भारी परिवर्तन होता गया। ईसा की छठी शताब्दी तक कर्ण सुवर्ण (बंगाल) उत्तरी बंगाल और कामरूप को प्राग्ज्योतिषपुर ही इनके अधिकार में रह गये। इस काल तक इन सोमवंशी क्षत्रियों की दो शाखाएँ हो गयी। कर्ण सुवर्ण (बंगाल) की शाखा सेनवंशी कुरू क्षत्रिय तथा उत्तरी बंगाल कामरूप की शाखा सोमवंशी कूच क्षत्रिय कहलाने लगे।

सोमवंशी कूच क्षत्रिय राजवंश – छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में सुस्थित वर्मन (महाभारत कालीन राजा भगद्दत्त का वंशज) ने दक्षिण कछार (कामरूप) में सैन्यशक्ति बढ़ाकर प्राग्ज्योतिषपुर पर आक्रमण कर दिया। इस अप्रत्योशित आक्रमण से सोमवंशी कूच क्षत्रियों को डीमापुर तथा उत्तरी कचार की तरफ हटना पड़ा। प्राग्ज्योतिषपुर और कामरूप के अधिकांश भाग पर सुस्थित वर्मन अधिकार हो गया। इसका पुत्र भास्करवर्मन था जिसने गौड़ बंगाल के राजा शशांक (सोम) से आतंकित हो कन्नौज के बैस क्षत्रिय सम्राट हर्षवर्धन का अधिपत्य और मैत्री स्वीकार की थी, परन्तु शशांक के निधन के पश्चात् इसने गौड़ बंगाल पर भी अधिकार जमा लिया और सातवीं शताब्दी के मध्य तक राज्य किया। भास्करवर्मन के चार सौ वर्ष के पश्चाात् पाण्डव भीमसेन के वंशज सोमवंशी कूच क्षत्रियों ने समस्त असम (कामरूप) पर

पुनः आधिपत्य जमा लिया। आजकल कामरूप शब्द का प्रयोग असम के मध्य प्रदेश गोआलपाड़ा से गुवाहाटी तक के अर्थ में होता है। प्राचीन काल में कामरूप से पूरे असम प्रान्त और उत्तरी–पूर्वी बंगाल तथा भूटान के विशेष भागों का बोध होता था। इस राज्य की राजधानी प्रागज्योतिषपुर (वर्तमान गुवाहाटी) थी।

सन् 1205 ई. में मुसलमानों ने कामरूप पर प्रथम आक्रमण किया। मुहम्मद बिन बख्तियार खिलजी ने असम की सीमा से निकलकर तिब्बत को विजय करने जा रहा था, परन्तु कूच क्षत्रियों ने नदी का पुल तोड़ दिया और आक्रमण कर के उसकी सारी सेना नष्ट कर दी। सन् 1227 ई. में लखनौती गौड़ बंगाल के नरेश ने कामरूप जीतने का असफल प्रयास किया। सन्1257 ई. में इख्तियार–उद–दीन युजबक तुगलक खान ने कामरूप पर आक्रमण किया जिसमें वह मारा गया। 1337 ई. में महमूदशाह ने कामरूप पर आक्रमण किया जिसमें उसकी सारी सेना मारी गयी। सन्1564 ई. में बंगाल का कुख्यात विध्वसंक तुर्क काला पहाड़ एक भारी सेना के साथ प्राग्ज्योतिषपुर पर चढ़ आया। उस समय कूच क्षत्रिय, अहोमजाति से युध्द में फसें हुए थे। उस लुटेरे तुर्क ने माता कामाख्या देवीजी का मंदिर तोड़ डाला और नगर में लुटमार मचा दी। अन्त में वह आततायी दुष्ट भी कूच क्षत्रियों द्वारा मारा गया। माता कामाख्या देवीजी का वर्तमान मंदिर कूच बिहार के राजा विश्वसिंह ने बनवाया। मूर्ति अष्टधातु से निर्मित है। सन् 1662 ई. में दिल्ली के बादशाह औरंगजेब के प्रसिध्द सेनापति मीर जुलाम को भी कामरूप से बुरी तरह पराजित होकर लौटना पडा। गंभीर घावों के कारण उसकी मृत्यु हो गयी। मुसलमाानो के लगातार प्रयत्नों और आक्रमणों के बावजूद असम पर मुसलमानों का आक्रमण पूर्वी बंगाल की तरफ से भी हुआ, परन्तु वहाँ भी कूच क्षत्रियों ने इन्हें सिलहट (पू. बंगाल) से आगे नहीं बढ़ने दिया, खदेड़ दिया। सन् 1228 ई. में बर्मा देश की प्रचंड लड़ाकू शान (ताई) जाति की एक शाखा अहोमवंश बड़ी भारी संख्या में पूर्व और दक्षिण से पटकाई पर्वत श्रृंखला को लाँघ कर, ढ़लान पर बसी जनजातियों को पराजित कर, इन पर्वतों की उपत्यकाओं पर अधिकार जमा लिया। बर्मा से कामरूप में इस अहोम जाति की लगातर घुसपैठ और इनके द्वारा अधिकृत प्रदेश के सीमा विस्तार को रोकने के लिये घटोत्कच वंशज कूच क्षत्रियों को इस जाति से छः सौ वर्षो तक निरंतर युध्द करना पड़ा जिसमें इनके विस्तृत राज्य का एक बडा भू–भाग अहोमवंश के अधिकार में चला गया। अहोमवंश एक जबरदस्त आक्रमक जाति थी। सोलहवीं शताब्दी के मध्य में इस जाति ने पूरी शक्ति से कोच राजधानी डीमापुर (हिडिम्बापुर) पर आक्रमण कर दिया और डीमापुर के किले को ध्वस्त कर दिया।

सन् 1750 ई. में जेन्तिया और अहोम के सम्मिलित आक्रमण से कूच क्षत्रियों को खासपुर हटना पड़ा, परन्तु सन्1826 ई. में कूच क्षत्रिय प्रतापी राजा गोविन्द चन्द्र सिंह ने उत्तरी कछार से अहोम जाति को मार भगाया और इस क्षेत्र का शासन अपने वीर सेनापति तुलाराम को सौंप दिया। सन् 1854 ई. में वीर तुलाराम सेनापति की मृत्यु के पश्चात् अंग्रेजो ने इस राज्य को हड़प कर कूटनीति से इस राज्य को नवगाँव में मिला दिया। सन् 1515 ई. में कूच क्षत्रिय महाराज विषम सिंह कामरूप (गुवाहाटी) के शासक थे। इसी वंश के राजा नर नारायण सिंह महान प्रतिभाशाली शासक थे जिनकी राजधानी कामरूप के अन्तर्गत कामतपुर (उत्तरी बंगाल) में थी। बाद में यह राज्य दो भागों में बंट गया। एक भाग कूच–बिहार तथा दूसरा कूच–हाजों कहलाया, जिसके शासक राजा रघुदेव सिंह थे। सन् 1639 ई. में अहोम जाति ने आक्रमण कर इस राज्य के भी कुछ भागों पर अधिकार जमा लिया। सन् 1694 ई. में राजा गदाधर सिंह ने भगवान शिवजी को समर्पित उमानंदा मंदिर का निर्माण कराया था जो ब्रह्मंपुत्र नदी के बीचो बीच टापू (पीकॉक आईलँड) पर स्थित है। हर वर्ष महाशिवरात्रि पर यहाँ भव्य मेला लगता है।

बीसवीं शताब्दी में महाराजा राजेन्द्र नारायण सिंह और उनके पश्चात् उनके सुपुत्र महाराजा जितेन्द्र नारायण भूप बहादुर, कूच बिहारके प्रतिभाशाली शासक रहे है। जयपुर (राजस्थान) कछवाहा (कुशवाहा) राज्य की राजमाता गायत्री देवी, कूच–विहार के राजवंश की हैं। देवास (मध्यप्रदेश) की महारानी भी इसी राजवंश की हैं। इस प्रकार यह कूच क्षत्रिय राजवंश, काठियावाड़, ग्वालियर, धौलापुर, देवास और जयपुर के क्षत्रिय राजवंशो से रिश्ते में जुड़ा हुआ है। अंग्रेज लेखक ई. ए. गैट के अनुसार "प्राचीन कामरूप (कोच) राज्य के शक्तिशाली क्षत्रिय राजवंश के उत्तराधिकारी वर्तमान कूच–बिहार (उत्तरी बंगाल), बिजनी, डारंग ये महाभारत के प्रसिध्द पाण्डव भीमसेन के वंशज है।[8] अंग्रेज लेखक मिस्टर जे. डी. एंडरसन के अनुसार "असम (कामरूप) का प्राचीन प्राग्ज्योतिषपुर (वर्तमान गुवाहटी) कोच क्षत्रिय राजाओं की प्राचीन राजधानी रही है। यह राजेश्वर शाक्त और शैव धर्ममतावलम्बी थे।[9] रेवरेंड सिडनी एण्डले के अनुसार "यह क्षत्रिय जाति शूरवीर, ईमानदार, सत्यवादी, स्पष्टवक्ता और स्वाभिमानी है।"

सातवीं शताब्दी के अन्त में इन्द्रप्रस्थ के महाराजा दामोदर सेन के मंत्री दीपसिंह ने षड़यंत्र कर सेना को अपनी ओर मिलाकर सेन महाराजा का वध कर दिया और स्वंय शासक बन गया। इसके बाद दामोदर सेन के ज्येष्ठ पुत्र विजयसेन दक्षिण की ओर चले गये। वहाँ चालुक्य सम्राट के सामन्त हो गये और एक छोटे राज्य की स्थापना की। राजा विजय सेन के पुत्र वीरसेन हुए। यह एक महत्वकांक्षी और प्रतापी राजा थे। कर्नाटक में स्थापित छोटे राज्य को अपने पुत्र रूद्रसेन को सौंप कर, सन् 757 ई. में हिमाचल प्रदेश में जा बसे, और सुकेत राज्य की स्थापना की।

———————————————————————————————

(8) कोच किंग ऑफ कामरूप By मि. ई. ए. गैट एसक्वायर, आई. सी. एस. असम सेक्रेटेरियट प्रैस, पी. ओ. 1895 A.D.
(9) The Kachharies (कच्छारिज) ठल रेवेन्ड सिडनी कृत, की भूमिका से मि. जे. डी. एंडरसन, रिटायर्ड आई. सी. एस. ए 1895

पांगण गाँव में राजधानी स्थापित करने के बाद अपने राज्य की सीमाओं का विस्तार आरम्भ किया। लगभग दो शताब्दीयों से सेन क्षत्रिय, वीरसेन क्षत्रिय वीरसेन के वंशज अपने पराक्रम से सतलज और व्यास नदियों के बीच के प्रदेश के एक मात्र स्वामी बन गये। मंडी, सुकेत, की वंशावली वीरसेन को आठवीं शताब्दी का पूर्वज स्वीकारती है। मंडी, सुकेत किश्तवार तथा क्योंथल के राजघराने स्वयं को सोमवंशी क्षत्रिय मानते है। गुजराती "क्षत्रियवंशावली" इन्हें पाण्डव भीमसेन के पुत्र घटोत्कच के वंशज क्षत्रिय मानती है। इनका गोत्र–अत्रि, प्रवर–अत्रि, आत्रेय और शातातप है। वेद–यजुर्वेद, शाखा–वाजसनेयी, सूत्र–पारस्करगृह्य–सूत्र है। कुलदेवता–शिव (महादेव) जी, कुलदेवी–तारादेवी और माता हिडिम्बाजी है। धर्मशाक्त है। दशहरे के दिन शस्त्र पूजन होता है। कुल्लु (मनाली) में देवी हिडिम्बा जी (पाण्डव भीमसेन की अर्ध्दागिनी) का बारह सौ वर्ष पुराना मंदिर है जहाँ हर वर्ष मेला लगता है। देवी हिडिम्बा जी का मंदिर मंडी राज्य में भी हैं जहाँ वे नमक की खानों–गुम्मा की स्वामिनी थीं। इस क्षेत्र में इनका इतना व्यापक प्रभाव था कि जब तक इनका रथ कुल्लु नगर में प्रवेश नहीं करता था तब तक दशहरा आरम्भ नहीं होता था। शिवरात्रि की यात्रा में भी इनका रथ मण्डी नगर में आता था। चम्बा के मेहला ग्राम में भी हिडिम्बाजी का मंदिर है। राज्य सुकेत, मंडी, किश्तवार, क्योंथल और विलासपुर की ये दादी अम्मा हैं। इन राज्य परिवारों में इन्हें देवी दुर्गाजी के समान पूजा जाता है।[10]

बंगाल के सोमवंशी सेन क्षत्रिय राजवंश – ईसा की आठवीं शताब्दी के मध्य में राजा वीरसेन ने, कर्नाटक में अपना राज्य, पुत्र रूद्रसेन को सौंपकर, हिमाचल प्रदेश में आकर एक नये राज्य की स्थापना की। कर्नाटक में स्थित उनके वंश में सामन्तसेन राजा हुए। यह कल्याणी के चालुक्यराज विक्रमादित्य के सेनापति थे। ग्याहरवीं शताब्दी के मध्य में जब चालुक्यराज विक्रमादित्य ने बंगाल पर आक्रमण किया तब उनके साथ आये सामन्तसेन ने उड़ीसा और बंगाल की सीमा में सुवर्णरेखा नदी के किनारे काशीपुरी नामक नगरी में सेनवंश क्षत्रिय राज्य की स्थापना की। सामन्तसेन के पौत्र विजयसेन काफी प्रतापी राजा हुए। उन्होंने उत्तरगढ़ के बौध्द धर्म मतावलम्बी राजा महीपाल (द्वितीय) को हराकर कर्ण–सुवर्ण पर अधिकार कर लिया और गौड़ाधिपति हुए। उन्होंने कलिंग पर भी विजय प्राप्त की। बैरकपुर ताम्रपत्र के लेखानुसार विजयसेन ने दक्षिण के शूरवंशी शासक की पुत्री विलासदेवी से विवाह भी किया था, जिनसे बल्लालसेन उत्पन्न हुए। इन सेन क्षत्रिय वंश में यह सबसे अधिक प्रतापी और विद्वान राजा हुए। महाराजाधिराज और निशाशंकशंकर इनकी उपाधियां थी। गौड़ का किला इन्हीं का बनवाया हुआ था इन्होने मिथिला विजय किया और अपने पुत्र लक्ष्मणसेन के नाम का संवत् प्रचलित किया, जिसका आरम्भ माघ शुक्ल एक से माना जाता है। लक्ष्मणसेन के नाम पर लक्ष्मण संवत भी चला।

महाराजा बल्लालसेन ने 'दानसागर' और 'अद्भूतसागर' जैसे उत्कृष्ट ग्रंन्थों की रचना की। इनके आश्रित कवि शरणदत्त ने बल्लालसेन चरित की रचना की थी। विक्रम संवत् 1567 में आनन्दभट्ट ने एक नये बल्लाल चरित की रचना की। यह आनन्दभट्ट का वंशज था। यह ग्रंथ उसने निम्नलिखित तीन पुस्तकों के आधार पर लिखा है। (1) साधु सिंहागिरी रचित व्यास –पुराण। यह साधु सिंहागिरी महाराज बल्लालसेन के गुरू थे। (2) कवि शरणदत्त रचित बल्लालसेन और (3) कालिदास नन्दी की जयमंगल गाथा।

---

(10) 'कुल्लु'–दा ऐंण्ड ऑफ हैब्टिबल वर्ल्ड By Mrs. पैनिलोप चैडबुडए कृत पृ. 112 संस्करण – 1928 A.D.

यह तीन महापुरूष महाराज बल्लालसेन के समकालीन थे। पालवंशी नरेशों के समय से वंग देश में बौध्द धर्म का बहुत जोर था। वैदिक धर्म नष्ट प्राय हो गया था। वर्णाश्रम व्यवस्था से रहित बौध्द लोक वैदिक धर्मावलम्बियों में मिलने लगे थे। अतः महाराजा बल्लालसेन ने वर्ण व्यवस्था का नया प्रबन्ध किया और पूर्वकालीन वंग शासक पाण्डववंशी सोमवंशी क्षत्रिय आदिशूर द्वारा कन्नौज से लाये गये कुलीन ब्राह्मणों का बहुत समान किया। कुछ लोग आदिशूर को सूर्यवंशी क्षत्रिय मानते है जो कि गल्त है। बल्लालसेन चरित में लिखा है कि महाराजा बल्लालसेन ने एक महायज्ञ किया। उसमें चारो वर्णो के पुरूष निमंत्रित किये गये।

बहुत से मिश्रित वर्ण के लोग भी बुलाये गये। भोजन पान इत्यादि से योग्यता अनुसार उनका सम्मान किया गया। उसमें यह भी लिखा है कि ग्वाले, तम्बोली, कसेरे, तांती, तेली,गन्धी, वैध और शांखिक ये सब सच्छूद (अन्त्यजों से ऊपर के दरजे वाले शूद्र) है और सब सच्छूद्रों में कायस्थ श्रेष्ठ हैं। (J.Bm.A.S. Pro, 1902 January) बंगाल के सेनवंशी क्षत्रिय नरेश बल्लालसेन ने कलकत्ता के काली क्षेत्र का दान तांत्रिक ब्राह्मण लक्ष्मीकांत को दिया था। तब से लेकर अब तक लक्ष्मीकांतके परिवार के हलदार ब्राह्मण ही कालीघाट के कालीमंदीर के पुजारी होते चले आये हैं। देवी के रौद्ररूप काली की पूजा इन्हीं तांत्रिक ने पहली बार द्विजों में प्रचलित की थी।[11] बंगाल के सेनवंशी वैद्य स्वंय को विख्यात महाराज बल्लालसेन के वंशज बतलाते हैं। जनरल कनिंघम का भी अनुमान है कि वंगदेशी राजा वैद्य ही थे। (जनरल कनिंघम की लाला बुझक्कड़ी ने गोंडा अवध के इतिहास की भी दुर्दशा की है)[12] बंगाल में बल्लालसेन नाम का एक अन्य जमींदार भी विख्यात हो चुका है। यह वैद्यजाति का था। उसका भी एक जीवन चरित्र "बल्लाल चरित्र" के नाम से प्रसिध्द है। उसके कर्ता गोपालभट्ट ने जो उक्त वैद्य बल्लालसेन का गुरू था, अपने शिष्य को वैद्यवंशी लिखा है। यह वैद्य बल्लालसेन,सेनवंशी क्षत्रिय बल्लासेन से 250 वर्ष बाद हुआ था। वैद्यवंशी बल्लाल चरित भी सेनवंशी क्षत्रिय बल्लाल चरित्र से बिलकुल अलग हैं दोनों का एक ही नाम होने से यह भ्रम उत्पन्न हुआ है। शेख अबुल फ़जल ने 'आइने–अकबरी' में बंगाल के पालवंशी राजाओं के पीछे सेनवंशी राजाओं की वंशावली दी है, परन्तु उनको कायस्थ

लिखा है। अतः बंगाल का एक कायस्थ वर्ग भी स्वयं को सेनवंशी लिखता है। अब विचाणीय है कि यदि बंगाल का सेनराजवंश वैद्य या कायस्थ जाति का होता तो सेन क्षत्रिय बल्लाल चरित में बैद्य व कायस्थ जाति को सच्छूद (अन्त्यजों से ऊपर के दर्जे वाले शूद्र) क्यों लिखा जाता ? देवपांडा (बंगाल) में मिले हुए बारहवीं शताब्दी के विजयसेन के शिलालेख के अनुसार –"उस प्रसिध्द सेनवंश में शत्रुओं को मारने वाला, वैदिक धर्म का उध्दारक, ब्राह्मण और क्षत्रियों का सिरमौर सामंतसेन उत्पन्न हुआ।"[13] अब्दुल फ़जल ने अज्ञानतावंश सेनों को कायस्थ लिखा है जबकि वे पाण्डववंशी कुरूवंशी क्षत्रिय हैं। यह सामतंसेन, विजयसेन के पितामह थे और बंगाल में ग्यारहवीं शताब्दी के मध्य में सेन क्षत्रियवंश के संस्थापक थे। मनु याज्ञवल्क्य व औशनस स्मृतियों के अनुसार हिन्दू वर्ण व्यवस्था में वैद्य व कायस्थ जातियाँ संकर वर्ण (अनुलोम) जातियां हैं अतः इन जातियों का ब्राह्मण व क्षत्रियों का मुकुट स्वरूप होने का प्रश्न ही नहीं उठता ।(ब्राह्मण पुरूष द्वारा क्षत्रिय स्त्री में जों संतान होती है वह ब्रह्मक्षत्रिय कहलाती है और वैद्यक कार्य कर सकती है।

———————————————————————————————

(11) ऐतिहासिक स्थानावली By पृ. 183, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर (राज.)

(12) ऐतिहासिक निबन्ध By रायबहादुर पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा, भारत के प्राचीन राजवंश ठल पं. पं. विश्वनाथा रेऊं, द्वितीय भाग भारतवर्ष में जातिभेद ठल आचार्य क्षितिज मोहन सेन कृत, और पश्चिमी बंगाल का सेनवंशीय गजेटियर–हुगली By बंगाल सरकार, पृ. 88–89 के अनुसार बंगाल का सेन राजवंश क्षत्रिय था।

(13) एप्रिगाफिया इण्डिया, भाग–1, पृ. 306

मूर्ध्दावसिक्त (संकर जाति) होने से यह जाति राजतिलक की अधिकारी नहीं है, अत क्षत्रियों का सिरमौर नहीं हो सकती। क्षत्रिय पुरूष द्वारा क्षत्रिय स्त्री में जो पुत्र होता है, मर्ध्दाभिषिक्त (श्रेष्ठ) होने से वहीं ब्राह्मण और क्षत्रियों का सिरमोर हो सकता है। अधिक विस्तार के लिए देखिए प्रो. (डॉ.) चन्द्रिकासिंह सोमवंशी,[14] रिसर्च स्कॉलर, का शोध प्रबन्ध 'पी.एच.डी.'का "सेनवंश"। बंगाल के सेनवंशी राजाओं के लेखो से उनके सोमवंशी क्षत्रिय होने के कुछ प्रमाण नीचे दिये जाते हैः–

(1) राजत्रयाधिपति–सेन–कुलकमल–विकास भास्कर।[15]

(2) भुवः काची लीला चतुर चतुरम्भोधिलहरी परिताया भर्ताउजति विजयसेन शशिकुले।[16]

(3) प्राचीन पुस्तक के अनुसार– "सेनवंश का प्रतापी राजा बल्लालसेन था। जिस समय इस राजवंश का बल बंगाल में बढ़ रहा था, उस समय कन्नौज में राठौरों का राज्य था, यह सेन क्षत्रियवंश भीमसेन के पुत्र घटोत्कच से चला है और सोमवंश तथा कुरूवंशी भी कहा गया है।"[17]

महाराज बल्लालसेन के पुत्र लक्ष्मणसेन थे। राजत्रयाधिपति, परमेश्वर, परम्भट्टारक, महाराधिराज मदनशंकर और गौडेश्वर इनकी उपाधियां थी। इन्होने अपने नाम पर लक्ष्मणवती (लखनौती) नगरी, बसाई जिसकी राजधानी नदियाँ थी। बारहवीं सदी में प्रसिध्द मुसलमान इतिहासकार मिनहाज सिराज के अनुसार उस समय लक्ष्मणावती और उसके चारों ओर अवस्थित याजनगर (उत्कल का उत्तरांश), वर्ग कामरूप और तिरहुत (मिथिला), यह सब देश मिलाकर, गौड कहलाते थे। गौड़ प्रदेश के स्वामी होने से सेन क्षत्रिय स्वयं को गौड़ चंन्द्रवंशी सोमवंशी बताते हैं। इनकी एक शाखा सिंह है जो पश्चिम बंगाल के वीरभूमि, बीकुड़ा, वर्धमान (वर्दवान), पुरूलिया, मुर्शिदाबाद, मालदा व उत्तरपाड़ा आदि स्थानों के निवासी हैं। इनका गोत्र–गौतम है प्रवर–गौतम, आंगिरस, बार्हस्पत्य, अप्सार और नैधुव हैं। वेद–यजुर्वेद, शाखा–वाजसनेयी, सूत्र'पारस्करगृह्य सूत्र है। कुलदेवी–माता कालिका जी व आराध्य देव शिवजी है। विजयदशमी के दिन शस्त्रपूजन करते हैं।

गोंडा अवध के सोमवंशी सेन क्षत्रिय – गोंडा में सोमवंशी सेन क्षत्रियों की राजसत्ता उस क्षेत्र में वर्तमान क्षत्रियों के आगमन से बहुत पहले की है। इन्द्रप्रस्थ नरेश महाराज दामोदरसेन के छोटे पुत्र जयसेन अपने साथियों सहित अवध में गोंडा क्षेत्र में आठवीं शताब्दी के आरम्भ में आये। उस समय गोंडा का अधिकांश क्षेत्र वीरान पड़ा था। किसी समय यहाँ गोनर्द नाम का समृध्द नगर था, परन्तु बाद में ब्राह्मणों और बौध्द के परस्पर विद्वेष से यह नगर क्रमशः नष्ट हो गया। पाँचवी शताब्दी के प्रारम्भ में जब बौध्द चीनी यात्री फाहियान, पवित्रनगरी श्रावस्ती (सेहटमहेट) के दर्शन करने आया तो उसने वहाँ बौध्द बिहार के खण्डहरों के पास 200 निर्धन परिवारों को बसा हुआ पाया था। 150 वर्ष के बाद बौध्द यात्री ह्येनसॉग (युवान च्वॉंग) ने यह स्थान निर्जन पाया था। केवल कुछ बौध्द परिव्राजक इन खण्डहरों में निवास कर रहे थे। इन चीनी यात्रियों ने श्रावस्ती और कपिलवस्तु नगरों के बीच के रास्तों को जंगल से परिपूर्ण पाया था। आठवीं शताब्दी में भी इस क्षेत्र की यही दशा थी।

———————————————————————————————

(14) सोमवंशियोंका इतिहास और उनके अभिलेख, सेनवंश देखिए।

(15) सोमवंश प्रदीप, (J.Bm.A.S. 1895 पृ. 13)।

(16) अद्भुतसागर By महाराज बल्लालसेन कृत, श्लोक संख्या–4

(17) क्षत्रिय वर्तमान ठल डॉ. अजीतसिंह, प्रहलाद सिंह, परिहार, पृ. 241 प्राचीन पुस्तक है।

कहीं–कहीं आदिवासी जनजातियाँ (थारू, पासी, डोम गोंड व कोली आदि) की बस्तियाँ थी। जयसेन ने अपने साथियों के साथ यही पर अपना राज्य स्थापित किया और आदिवासी जनजातियों से जंगल साफ करवाकर इस भूमि को फिर से कृषि योग्य बनवाया। अगले पाँच सौ वर्षो तक सोमवंशी सेन क्षत्रिय इस क्षेत्र के स्वामी रहे। गोंडा अवध में सोमवंशी सेन क्षत्रियों ने 8वीं शताब्दी से 12वीं शताब्दी तक कई छोटे–छोटे राज्य स्थापित किये। राजा जयसेन के पुत्र राजा माधवसेन ने 8वीं शताब्दी में वर्तमान महादेवा परगना में किला बनवाया था तथा महादेवजी का मंदिर का निर्माण कराया था यह किला गोंडा में सेन क्षत्रियों के शासन का केन्द्र था। इस किले को 13वीं शताब्दी में दिल्ली के सुलतान, इल्तुतमिस (अल्तमस) के पुत्र मलिक नसीरूद्दीन महमूद ने भीषण युध्द के पश्चात् ध्वस्त करा दिया था। बाद में इस किले के ध्वंसावशेष पर 14वीं शताब्दी में अलाउद्दीन खिलजी द्वारा गोंडा पर तैनात हाकिम डोम उग्रसेन ने डुमरिया का गढ़ बनवाया था। अगले कई सौ वर्षो तक इस क्षेत्र के निवासी पुराने किले की नीव से ईंटे निकाल निकाल कर अपने घर बनवाते रहे थे। गौरी महादेवजी का मंदिर आज गुसाईयों के अधिकार में है। वे ही वहाँ के पुजारी हैं। दसवीं शताब्दी में राजा अशोकसेन ने अशोक पुर बसाया था और वहाँ अशोक महादेवजी का भव्य मंदिर बनवाया था। 13वीं शताब्दी में मुसलमानों ने इस मन्दिर को ध्वस्त कर वहाँ हटीलापीर का मजार बना दिया। इससे पहले 9वीं शताब्दी में राजा खड्गसेन ने खड्गपरू (वर्तमान खर्गपुर या खरगपुर) नगर बसाया और वहाँ भगवान महादेव शिवजी का एक विशाल मंदिर बनवाया था। इस मंदिर को मुसलमानों ने 13वीं शताब्दी में ध्वस्त कर दिया।

18वीं शताब्दी में अयोध्या के राजा मानसिंह ने इस मंदिर को दुबारा बनवाया और मलबे में दबे प्राचीन महादेवजी की मूर्ति को निकालकर पुनः प्रतिष्ठित कराया। दसवीं शताब्दी में राजा वरूणसेन ने वरूणपुर (वरनपुर) बसाया। नगर के किनारे बहती नदी का नाम वरूण (वरन) नदी पड़ गया। ग्यारहवीं शताब्दी मे राजा चन्द्रसेन के पुत्र माणिकसेन ने थारू जाति से जंगल साफ कराकर माणिकपुर (वर्तमान मनकापुर) बसाया था जिसे 14वीं शताब्दी में गोंडा के हाकिमडोम उग्रसेन ने अपने मित्र मक्का भार को सौंप दिया यह नगर मक्काभार से बाँधलगोती राजपूतों ने छीन लिया और अब यह बिसेन राजपूतों के अधिकार में है। बारहवीं शताब्दी के अन्त में सेन क्षत्रिय राजा जगतसेन ने अति प्राचीन पाटन देवी (माता चंडी देवी) के प्रसिध्द मंदिर के चारों ओर के घोर जंगल को साफ करा कर अपनी माता के नाम तुलसीपुर बसाया। तेरहवीं शताब्दी के पश्चात् यह क्षेत्र पर्वतीय चौहान/ सिसोदिया क्षत्रियों के अधिकार में रहा, बाद में जनवार राजपूतों के अधिकार में चला गया। 18वीं शताब्दी में तुलसीदास नाम के एक धनाढ्य कुर्मी ने यहाँ एक बाजार चलाने की कोशिश की परन्तु असफल रहा। कुछ लोग भ्रमवश इस तुलसी दास द्वारा तुलसीपुर बसाना समझते हैं, जो सम्भव नहीं, क्योंकि उस समय भी यह क्षेत्र जनवार क्षत्रियों के अधिकार में थी आज भी गोंडा में बहुत से दर्शनीय धार्मिक स्थल हैं, जिन्हें पाण्डवो द्वारा निर्मित कराया माना जाता है, परन्तु वास्तव में इन धार्मिक स्थलों का निर्माण सोमवंशी सेन क्षत्रियों ने 8वीं से 12वीं शताब्दी के मध्यकाल में कराया था जो पाण्डव भीमसेन के वंशज है। अवध क्षेत्र किसी समय क्षत्रिय शक्ति का केन्द्र था। चौथी शताब्दी के बाद से तेरहवीं शताब्दी तक अवध क्षत्रिय शक्ति का विकेन्द्रीकरण हो गया। उस काल अवध में जिन इने–गिने क्षत्रियों के राज्य थे, उनका राजनीतिक महत्व नगन्य था। इतिहास में इनका जिक्र तक नहीं है। 19वीं शताब्दी में गोंडा अवध के कमीश्नर और इतिहासकार मि. पैटरिक कारनेगी के अनुसार 9वीं और 10वीं शताब्दी में गोंडा पर सोमवंशी क्षत्रियों का राज्य था।

यह सोमवंशी क्षत्रिय पाण्डव भीमसेन के प्रसिध्द पुत्र घटोत्कच (घरूका) के वंशज थे जो गोंडा पर 8वीं शताब्दी मे राज्य कर रहे थे। पाण्डव अर्जुन के वंशज सोमवंशी क्षत्रिय 12वीं शताब्दी के बाद अवध में और 14वीं शताब्दी में गोंडा में आकर बसे थे। सोमवंशी सेन क्षत्रिय शैव थे अतः गोंडा में उन्होंने केवल अपने इष्ट भगवान शिवजी महादेव और देवी गौरीजी के मन्दिरों का निर्माण कराया था। जैन धर्म व बौध्द धर्म में उनकी आस्था नगन्य थी। अतः श्रावस्ती (सहेट–महेट) के जैन व बौध्द के जीर्ण मन्दिरों व खण्डहरों के उद्वार पर उन्होने ध्यान नहीं दिया परन्तु श्रावस्ती के जैन मन्दिरों व उनके आसपास की भूमि पर जिस जाति ने विकास कार्य किया उसके धार्मिक प्रबन्ध कार्यो में उन्होंने हस्तक्षेप भी नहीं किया। श्रावस्ती के खण्डहरों में एक छोटा सा जैन मन्दिर अभी है जो तीसरे जैन तीर्थकर शोभानाथजी का जन्मस्थान माना जाता है।

दसवीं शताब्दी में एक जैन धर्मावलम्बी– मयूरध्वज नामक व्यक्ति सहेट महेट की तीर्थयात्रा पर आया और यही बस गया। सहेट–महेट मे उसने जमींदारी कायम की, जो उसके वंशजो के अधिकार में चार पीढ़ी लगभग सौ वर्षो तक रही। स्थानीय जैन राजा रहे। उसक काल सहेट–मेहट एक छोटा सा कस्बा था जो गोंडा औरब बहरायच के बीच में स्थित था। श्रावस्तीजैन व बौध्द धर्म का प्राचीन धार्मिक स्थल होने की वजह से इन धर्म के अनुयायी दूर देशों से यहाँ आते रहते थे। अतः मयूर ध्वज राजाओं का नाम भी इतिहास में लिखा गया। दंत–कथाओं को स्थानीय सीमा में बाँधना संभव नहीं है। इन चार राजाओं मयूरध्वज, हंसध्वज,मकरध्वज और सुधन्वाध्वज ने महाभारत काल में छत्तीसगढ़ (मध्यप्रदेश) में भी राज्य किया था।[18] जनरल कनिंघम सहेट–महेट के इन राजाओं को थारू जाति का मानते हैं। थारू जाति आज भी आदिवासी जनजाति मानी जाती है जिनका खानपान, सामाजिक स्तर और धार्मिक मान्यताएं जैन धर्म के बिल्कुल विपरीत हैं। कुछ लेखक इन्हें सूर्यवंशी क्षत्रिय होना अनुमानित करते हैं और सुधन्वाध्वज को ही राजा सुहेंलदेव की संज्ञा देते है। राजा सुहेलदेव के विषय में दंतकथाएं प्रचलित हैं जो छत्तीसगढ़ के प्राचीन इतिहास की भी एक सांस्कृतिक धरोहर है। भर जाति ग्यारहवीं शताब्दी के भरीच (बहरायच) के राजा सुहेलदेवको अपना पूर्व पुरूष और नायक मानती है। दसवीं और ग्यारहवीं शताब्दी में अवध क्षेत्र सभ्य और जंगली कही जाने वाली बहुसंख्यक भर जाति बडी प्रबल थी। साकेत (फैजाबाद–अयोध्या) कुशम्बनिया (वर्तमान–सुलतानपुर), डलमऊ (रायबरेली), पांचोसिध्द–अरोर

(प्रतापगढ़) हरदोई, बाराबंकी, भरीच (बहरायच) में भरों के राज्य स्थापित थे। जो लोग मयूरध्वज राजा को थारू जाति का मानते हैं उनका मत गल्त है। मयूरध्वज और उसके पूर्वज प्राचीन छत्तीसगढ़ में शासन कर रहे थे जो कि पाण्डववंशी सोमवंशी क्षत्रियों के खानदानी थे। वे सूर्यवंशी न होकर कुरूवंशी थे।

ग्यारहवीं शताब्दी में महमूद गजनवी ने कई बार भारत पर आक्रमण किये। हर बार अपार–धन–समाप्ति लूट कर गजनी ले जाता था और असंख्य भारभीय स्त्री पुरूषों को बन्दी बनाकर गजनी ले जाकार गुलाम बतौर बेचा करता था। गुजरात के सोमनाथ मन्दिर पर महमूद गजनवी का आक्रमण और असंख्य धन–सम्पति की लूट तो इतिहास प्रसिध्द है। उसके इस लूट लूट से प्रेरित होकर सन् 1033 ई. में उसका भांजामसूद (गाजी सैयद सालार मसूद) मुस्लिम फकीर का वेष धारण कर डेढ़ लाख मुस्लिम लुटेरों की फौज लेकर भारत पर चढ़ आया। राजपूतों ने इस क्रूर आक्रमणकारी को मार भगाने का भरसक प्रयास किया। भीषण युध्द हुआ, परन्तु संगठन और परस्पर सहयोग के अभाव में राजपूत शासक एक–एक कर पराजित होते गये।

(18) सेन्ट्रल प्राविन्सस गजेटियर्स, पृ. 159.

यह आततायी दिल्ली और कन्नौज को भी रौंदता हुआ आगे बढ़ा। परन्तु संगठन और परस्पर सहयोग के अभाव में राजपूत शासक एक–एक कर पराजित होते गये। और यह आततायी दिल्ली और कन्नौज को रौंदता हुआ, मन्दिरों को ध्वस्त कर लूटता और जलाता हुआ अपनी विशाल वाहिनी (सेना) के साथ अवध क्षेत्र में आ पँहुचा। अवध क्षेत्र में भर जाति प्रबल और संगठित थी। बहरायच का भर राजा सुहेलदेव एक शक्तिशाली पुरूष था। उसके नेतृत्व में भर जाति ने उस क्रूर आक्रमणकारी से भीषण युध्द किया। इस युध्द के दौरान मसूद के भतीजे सैयद हटीला ने एक बड़ी फौज के साथ गोंडा के मन्दिरों को तोड़ने और लूटने की नीयत से गोंडा पर आक्रमण किया। पहला आक्रमण उसने गोंडा के अशोक महादेव मंदिर (जिसे राजा अशोकसेन ने दसवीं शताब्दी में बनवाया था) को तोड़ने के लिए किया। परन्तु तत्कालीन सेन क्षत्रिय राजा चन्द्रसेन ने युध्द में हटीला को मारकर उसकी लुटेरी फौज को नष्ट कर दिया। इसके पश्चात अपनी प्रजा आदिवासी जनजातियों (थारू,गोड, पासी,डोम व कोल) की एक संगठित सेना के साथ राजा चन्द्रसेन ने मुस्लिम सेना पर तीव्र आक्रमण कर दिया। इस भीषण युध्द में कुछ ही दिनों में मुस्लिम लुटेरों की एक लाख बीस हजार की फौज काट डाली गयी।

जून 14, 1034 ई. के दिन भर राजा सुलेहदेव ने युध्द में गाजी सैयद सालार मसूद को भास्कर उसके दो टुकड़े कर दिये और उसकी लाश को जमीन में गड़वा दिया। मसूद की सारी फौज मारी गयी। इस लड़ाई में भरों की शक्ति भी क्षीण हो गयी। तेहरवीं शताब्दी के प्रारंभ में जब तुर्को के पैर पंजाब से दिल्ली–कन्नौज तक पूरी तरह जम गये तब दिल्ली के सुलतान इल्तुतमिस (अल्तमस) ने सन् 1226 ई. में अपने ज्येष्ठ पुत्र मलिक नसीरूद्दीन महमूद को एक बडी फौज के साथ अवध विजय के हुतु भेजा। यह सुल्तान अल्तमस, महमूद गजनवी की तरह ही, कुख्यात मंदिर विध्वंसक और मूर्ति भंजक था। इसने हिन्दओं के अति प्राचीन महिमामयी नगरी उज्जैन पर आक्रमण कर भीषण नरसंहार किया था। उज्जैन मन्दिरों का गढ़ भी कहा जाता है। अयोध्या और उड़ीसा भी मन्दिरों का गढ़ माने जाते हैं। हिन्दओं के आराध्य देव महाकालेश्वर की मूर्ति को खण्डित करके जगत प्रसिध्द मंदिर को ध्वस्त करा दिया था, और अपार धन् सम्मति लूट कर दिल्ली ले गया था। काफिरों के प्रति उसके दिल में कोई दया नहीं थी। नरसंहार, लूटपाट और आगजनी के धार्मिक जिहादों में मलिक नसीरूद्दीन महमूद अपने बाप सुलतान अल्तमस से भी बढ़कर जाहिल था। अवध में उस समय भर जाति की शक्ति क्षीण हो चुकी थी।

एक–एक कर उनके राज्य पश्चिम से आये राजपूतों के अधिकार में चले जा रहे थे, अतः वे संगठित होकर मुसलमानों का सामना नहीं कर सके। इस समय भर जाति का कोई शक्तिशाली राजा भी नहीं था जो उनका नेतृत्व कर सके। नवागत राजपूतों ने शक्तिशाली मुस्लिम शासक से उलझना उचित नहीं समझा, अतः उन्होंने भरों की मदद नहीं की। परिणाम यह हुआ कि मुसलमानों ने निरदयता पूर्वक भरों का संहार कर गाजी सैयद सालार मसूद को मौत के घाट उतार कर बदला लिया। उसके गाँव के गाँव जला दिये और उस अग्नि में भरों के पुरूषों, स्त्रियों और बच्चों को झोंक दिया। बहरायच से भर जाति का नामोनिशान मिटा दिया गया। इन बर्बर नृशंस (नृमम) हत्याकांड के पश्चात् मलिक नसीरूद्दीन महमूद ने गाजी सैयद सालार मसूर की सड़ी–गली हड्डियों पर एक शानदार मजार बनवाया और उसे "धर्म का शहजादा" नाम देकर पवित्र पीर बना दिया। इस मजार पर अब वार्षिक मेला लगता है और उसे वहाँ कुछ अन्धविश्वासी हिन्दू भी मुसलमानों के साथ मन्नत मनौती करने जाते है। जयराम पेशा जातियों की इस पीर पर अर्ध्द श्रध्दा है।

ग्यारहवीं शताब्दी में गोंडा के सेन क्षत्रियोंने सैयद हटीला को मारकर उसकी फौज को नष्ट कर दिया था। सैयद मसूद और उसकी फौज को मारने में भरों का साथ दिया था। अतः सेन क्षत्रियों को दण्ड देने के लिये मलिक नसीरूद्दीन महमूद ने एक विशाल फौज के साथ गोंडा पर भीषण आक्रमण किया। मुसलमानों द्वारा भरों का नृशंस हत्याकांड से आंतकित हो आदिम जन जातियाँ थारू, कोल, पासी, डोम गोड आदि भाग कर जंगलो में जा छिपे। तुर्को की विशाल और जिहादी सेना का सेन क्षत्रियों ने अपनी शक्ति से डट कर मुकाबला किया। अन्तिम निर्णायक युध्द वर्तमान महादेवा में स्थित पाँच सौ वर्ष पुराने किले पर हुआ। यह किला राजा माधवसेन ने 8वीं शताब्दी में बनवाया था, तब से यह गोंडा के शासन का केन्द्र था। सेन क्षत्रिय अल्पसंख्या में थे। मुसलमानों ने किले को चारों ओर से घेर लिया था। उनके बार–बार

के आक्रमणों को किले के प्राचीरों से तीरो और बरछों के बौछारो से विफल कर दिया जाता था। एक दिन आक्रमणकारी, अर्धरात्रि में पश्चिम की तरफ से बांसो की बडी–बडी सीढियाँ लगाकर ढाल की ओट में किले की दीवार पर चढ़ने में कामयाब हो गये। भयंकर मारकाट के बीच बहुसंख्यक तुर्क किले के भीतर उतर गये और किले का फाटक खोलने में कामयाब हो गये। मुस्लिम फौज किले के भीतर घुस आई। काफी मार–काट हुआ। खून की नदियाँ बह गयीं। सेनवंशी राजा के सैनिकों ने जमकर यानि डट कर मुकाबला किया किन्तु पराजित हो गये। भीषण युध्द हुआ। बुरी तरह घायल राजा विक्रमसेन युध्द में वीरगति को प्राप्त हुए। सेन क्षत्रिय पुरूष व स्त्रियाँ सभी वीरता से लड़े और कट मरे। मुसलमानों ने महलों में आग लगा दी। अशक्त स्त्रियां, बूढ़ें और बच्चे आग की भेट चढ़ गये। तुर्को ने अमानुषिक अत्याचार किया। खोज–खोज कर सेन क्षत्रियों का संहार किया, जो भूमिगत हो गये, वे बच गये, परन्तु गोंडा की राज्यसत्ता से सदैव के लिए वंचित हो गये।

इस युध्द में मुसलमान भी बड़ी संख्या में मारे गये थे। गोंड़ा में जगह–जगह मुसलमानों के कब्र बन गये थे। मालिक नसीरूद्दीन महमूद ने सेन क्षत्रियों के पाँच सौ वर्षो से लगातार संचित राज्यकोष को लूटकर किले को महलों समेत ढ़हा कर जमींदोज कर दिया। अशोक महादेवजी के मन्दिर को ध्वस्त कर उस पर हटीला पीर का मजार बना दिया। सेन क्षत्रियों द्वारा बसाये गोंडा के सुन्दर नगरों को तुर्को ने तहस नहस कर दिया। सभी मंदिरों को लूट कर ध्वस्त कर दिया गया। ये जिहादी मूसलमान अगले सौ वर्षो तक गोंडा पर पूरी शक्ति से काबिज रहे, जिससे सेन क्षत्रिय दुबारा संगठित न हो सके। जिहादी मुसलमानों ने सेनक्षत्रियों की कमर तोड़ दी। सेन क्षत्रियों की मार ईसवी सन् तीसरी–चौथी शताब्दी में मार करने वाले अजेय शक्ति 'यौधयों' के समान थी। उनकी मार बड़ी ही मार्के की थी। उनसे टक्कर लेना कोई बच्चों का खेल न था। इसके बाद गोंडा ऐसा अभिशाप्त हुआ कि दुबारा अपने प्राचीन वैभव और गौरव को प्राप्त नहीं कर सका। 14वीं शताब्दी और उसके बाद गोंडा के स्थानीय राजपूत शासक, अवध के मुसलमान शासकों के चँगुल से कभी भी आजाद नहीं हो पाये।

ये मुसलमान शासक, अवध लगान वसूली के नाम पर पेशेवर डाकुओं से इन राजपूत जमींदारों को लुटवाते रहते थे। आपसी सद्भावना और एकता के अभाव में ये राजपूत जमींदार कारिदों से हमेशा लुटते–पिटते रहे और कभी सम्पन्न नहीं हो सके। एक ज्वलंत उदाहरण 19वीं शताब्दी के अवध के मुस्लिम शासकों के कारिंदे–कायस्थ दर्शन सिंह, बख्तावर सिंह, उनके पुत्र रघुबर दयालसिंह और बिहारी लालसिंह हैं। लगान वसूलने के बहाने इन दुष्ट–पिशाचों ने मुस्लिम फौज को साथ लेकर, गोंडा के गाँव तबाह कर दिये थे।

सम्पन्न जमींदारों को लूटकर उन्हें निर्धन बना दिया और निर्धन किसानों को पकड़ कर उन्हें गुलाम बतौर बेच देते थे। सन् 1839 और 1841 ई. में इन दुष्टों ने बलरामपुर के जनवार राजा को लूट कर उसके छोटे से किले पर भी अधिकार कर लिया और दो सौ आदमियों को मार डाला था।[19] सन् 1956 ई. में हिंदी साहित्य के मूर्धन्य लेखक प. अमृतलाल नागर ने अवध के सब जिलों से गोंडा जिला को निर्धन पिछडा हुआ और धार्मिक अन्धविश्वास में डूबा हुआ पाया था।[20] मलिक नसीरूद्दीन महमूद ने गोंडा के सोमवंशी सेन क्षत्रियों के राज्यों को जब्त कर उनकी भू–सम्पति अपने जिन कृपा पात्रों को बाँटी थी, सौ वर्ष के भीतर ही उनके वंशजों ने दिल्ली सरकार को राज्य कर देना बन्द कर दिया। तब सन् 1323 ई. में दिल्ली के सुलतान ग्यासुद्दीन तुगलक ने उन पर चढ़ाई करके राज्य कर की बसूली की। इसके बाद उनके नाम पर शासित क्षेत्रों की सीमा निश्चित कर राज्यकर वसूलने के लिये अपना एक सुबेदार अवध पर तैनात कर गया। इससे पहले के गोंडा और उसके शासकों का नाम किसी सरकारी दस्तावेजों में नीहं लिखा गया था इसी कारण तेरहवीं शताब्दी में राच्यच्युत सेन शासकों का नाम केवल दंतकथाओं की परम्परा में जीवित है। महाभारत के प्रसिध्द पाण्डव भीमसेन के महाबली पुत्र घटोत्कच के वंशज सोमवंशी सेन क्षत्रियों की स्थिति गोंडा अवध में अब काश्तकार की है। परन्तु बंगाल, असम, हिमाचल प्रदेश में सही वंश प्रतिष्ठीत क्षत्रिय राजवंश है। प्रवर अत्रि, गोत्र–अत्रि आत्रेय और शातातप है। गोत्र–व्याघ्र पद्य (व्याघ्रदप्त) प्रवर–व्याघ्रपद्य और सँकृति हैं। कहीं–कहीं गोत्र–पराशर, प्रवर–पराशर, शक्ति और वशिष्ठ है। वेद–यजुर्वेद, शाखा–वाजसनेयी, सूत्र–पारस्करगृह्य सूत्र हैं कुलदेवी–चण्डी देवी और हिडिम्बा माता हैं। कुलदेवता–भगवान शिवजी (महादेव) है। धर्म–शाक्त है। दुर्गा नवमी के दिन चण्डी यज्ञ पूजन करते है। विजयदशमी के दिन शस्त्रपूजन करते है।

पांडव भीमसेन वंशज बनाफर क्षत्रिय – अदम्य शौर्य के धनी और वीर प्रसूत क्षत्रिय जाति "पाण्डव भीमसेन के महाबलो पुत्र घटोत्कच के वंशज है। राजपूत वंशावली के विद्वान लेखकों ने क्षत्रिय वंशों पर वर्षो के शोध व गहन अन्वेषण द्वारा प्रमाणित किया है कि बनाफर क्षत्रिय घरूका वंशी क्षत्रिय है।[21] इस पांडव वंश में राजा बच्छराज हुए थे जिनके वंशज बनाफर क्षत्रिय कहलाए। यद्यपि मध्ययुग में इस वंश ने कोई स्वतंत्र राज्य स्थापित नहीं किया तथापि यह क्षत्रिय अपनी शूरवीरता के लिये प्रसिध्द थे। चन्देल नरेश सदैव इसी क्षत्रियवंश (बनाफर) को मंत्री, सेना पति और सामन्त पद पर आसीन करते थे। बनाफर क्षत्रियों की वीरता का महाकाव्य "(आल्हा खण्ड) की रचना चन्देल नरेश परिमल परमार्दिदेव (परमाल) के दरबारी कवि जगनिक ने किया था। राम चरित मानस के बाद इसी ग्रन्थ को सबसे अधिक लोकप्रियता मिली है। इस बनाफर वंश के क्षत्रियों पर डॉ. चन्द्रिकासिंह सोमवंशी, रिसर्च स्कॉलर ने विस्तार से चर्चा की है।[22]

---

(19) फूलों का देश अवध By माइकल एडबर्ड कृत।
(20) गदर के फूल By पंण्डित अमृतलाल नागर, सन् 1956 ई.।

(21) नुपंशवलि By कवि मतिराम कृत, क्षत्रिय वंशावली By ठाकुर उदयनारायण सिहं, गोरखपुर, रूद्र क्षत्रिय प्रकाश By डॉ. रूद्रसिंह, तोमर, इन्द्रपस्थ, क्षत्रिय वंशार्णव By डॉ. भगवानदीनसिंह, प्रताप गढ़ – इन्होंने अनेकों ग्रंथो का अध्ययन किया है।

(22) कच्छ का ऐतिहासिक एंव सांस्कृतिक अनुशीलन; बनाफर वंश के लिए देखिए ⟶ ► संदर्भित अध्याय।

विस्तार के लिए देखिए डॉ. सोमवंशी, रिसर्च स्कॉलर, का U.G.C. 'Minor Research Project' "कच्छ का भौगोलिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन" संक्षिप्त में।

बनाफर क्षत्रियों का गोत्र – कौंडिन्य, कही पराशर और कहीं–कहीं गौतम और काश्यप्प भी है, जो पुरोहितों के भेद के कारण है। इनका वेद–यजुर्वेद, शाखा–वाजसनेयी, सूत्र पारस्करगृह्य सूत्र है। कुलदेवी शारदा देवी ईष्ट देव शिवजी है। विजय दशमी के दिन शस्त्रपूजन करते है। इस वंश के क्षत्रिय–उत्तर प्रदेश मे बाँदा, ललितपुर, जालौन, हमीरपुर, गाजीपुर, वाराणसी और गोरखपुर, बिहार में राँची और गया तथा मध्यप्रदेश में बुन्देलखण्ड और दतिया में हैं। बनाफर क्षत्रियों की एक शाखा पठानियाँ है। पंजाब के पठानकोट के राजा होने से पठानिया कहलाए। ये शूरवीर क्षत्रिय हैं।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net